## दिनांक 10 सितम्बर, 1985

सं अप्रो विव /एफ बी । 135-85/37181 -- चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व जयको स्टील फास्टनर प्राव् लिं , 269/24, फरीवाबाद के श्रमिक श्री रामाधार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई आधोगिक विवाद है ;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिकिनयम की धीरा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रामाधार, की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰वि॰/एफ॰डी॰/135-85/37188.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ जयको स्टील फास्टनर प्रा॰ लि॰ 269/24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राकेश बाबू तथा उसकें प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हैतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राकेश बाबू की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 30 सितम्बर, 1985

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी०/96-85/40372.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इलैक्ट्रो फार्मरज इण्डिया, प्लाट नं० 85, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मुनेश्वर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिर्मितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415—3%म—68/1.5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 1495—जी—श्रम—57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्याश्री मुनेश्वर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

ूस० ग्रो०वि०/एफ०डी०/96-85/40379- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० इलैक्ट्रो फार्मरज इण्डिया, प्लाट नं० 85, सैक्टर-24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री तिवारी तिथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हे तु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरियाणां के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3%म-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7फरवरी, 1958 के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामलों न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :=

क्याश्री तिवारी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है, थिद नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 1 अक्तूबर, 1985

स० ग्रो०वि०/एफ०डी०/239-85/40745.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ली माऊन्ट गारमैंटस, 12/6, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री महेन्द्र कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौरं चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं,

इक्लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रादान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं० 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिस्चना सं० 11495—जी श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है —

क्या श्री महेन्द्र कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

स० ग्रो०वि०/एफ०डी०/233-85/40752-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० प्रवीन रिइनफोर्संड प्लास्टिक प्रा०लि०, 14 माईल स्टोन, डी०एल० एफ०, फरीदाबाद के श्रमिक श्री बीर बहादुर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;.

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इस लिए , ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 4515-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मा मला यायिनिण के लिए निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री बीर बहादुर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि/एफ डी./172-85/40766.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राएहै कि मै० मदन इंजिनियरिंग वर्कस, ग्रीद्योगिक नगर, बांके बिहारी मन्दिर एन० ग्राई० टी० फरीदाबाद के श्रीमिक श्री देवेन्द्र कुमार तथा उस के प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए,,•अब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415—3श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए

IN TAKE THE PARK

निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बोच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री देवेन्द्र कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि०/एफ. डी./179-85/40773.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै॰ रिव इन्टर प्राजिज कारखाना 5/122, नेखनहट लेबर हुड नं० 5, रेलवे रोड, फरीदाबाद टाउनिशिप के श्रीमिक श्री ग्रशोक कुमार तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणां के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब ग्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की ईग शक्तियों का प्रयोग करते हुए हिरायणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिस्चना सं० 5415-3-श्रम 68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिस्चना सं० 11495-जी श्रम 57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिस्चना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धत नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या ती विवादग्रस्त मामला है या विवाद से मुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री अशोक कुमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किह राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/एफ० डी./171-85/40780. चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० ग्रुक्ण इन्टरप्राईजिज, 5 एन०एच०, रेलवे रोड, एन० ग्राई० टी०, फरीदाबाद के श्रीमक श्री राम, किशन गुप्ता तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतू निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब्ध ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की घारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की । गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415—3—श्रम 68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रधिसूचना सं० 11495—जी श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री राम किशन गुप्ता की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो० वि०/एफ.डी०/134-85/40787.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० सारको इन्डस्ट्रीज प्रा० लि०, 12/6, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री झगरू लाल यादव तथा उसके प्रबन्धकों के मूमव्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायानिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415—3-श्रम 68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495—जी श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे जिला मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रिथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री झगरू लाल यादव की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?